International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2017; Page No. 07-12

प्रेमचंद और रावूरि भरद्वाज की कहानियों के परिकल्पना में गरीबी

डॉ० पी० तिरुपतम्मा

हिन्दी विभाग, बी०सि०ए०स० कालेज, बापटला, आन्ध्र प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

गरीबी समाज के लिए कोढ मानी गयी है। इससे संबंधित अनेक विकृतियों तथा परिणामों के बीच से गरीबी के स्वरूप को समझने और समझाने का प्रयत्न अनेक विद्वानों ने किया है। भौतिक जीवन को दृष्टि में रखकर कुछ विद्वानों ने गरीबी को जीवन की आवश्यकताओं के संदर्भ में देखने का प्रयत्न किया है। सामन्यतः मानव को जीने के लिए आवश्यक चीजों की प्राप्ति कराना एक सामाजिक दाइत्व होता है। जहाँ यह संपन्न नहीं होता वहाँ गरीबी देखी जाती है। इसके संबंध में कुछ विद्वानों के विचार इस प्रकार है-

गोडाड्स के अनुसार

"गरीबी मनुष्य की वह स्थिति है जिसमें उसके द्वारा व्यक्तिगत और उस पर आधारितों की तंदुरुस्ती वा जीवन शक्ति को कायम रखने के लिए आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति का अभाव रहता है"।[1]

आडम स्मित के अनुसार

"जीवन की आवश्यकताओं, सुविधाओं एवं सुख संतोषों को अनुभव करने की क्षमता तथा उसके स्तरों के अनुसार मनुष्य की गरीबी एवं संपन्नता आँकी जाती है"।[2]

गिल्लिन के अनुसार

"गरीबी वह स्थिति है, जिसमें मानव समाज के अंतर्गत मनुष्य भौतिक एवं मानसिक क्षमता के साथ मान्य स्थरों के अनुरूप जीने और काम करने की सामर्थ्य को अपनी अल्प आमदनी अथवा असंतुलित व्यय के कारण खो बैठ्ता है"।[3]

इस प्रकार विश्व के विभिन्न साहित्यशास्त्री, समाजशास्त्री तथा अर्थशास्त्रियों के द्वारा व्यक्त अभिप्रायों से यह स्प्ष्ट होता है कि गरिबी के दो धरातल है–

एक भौतिक आवश्यकताओं से संबंधित है दूसरा मानसिक। उनकी भूमिका में गरीबी में पले, अनुभूत किये तथा विभीषिकाओं को समझनेवाले दो महान कलाकार प्रेमचंद और भरद्वाज की कहानियों के परिकल्पित वक्तव्यों का सम्यक आकलन भी समीचीन ही होगा।

इस संदर्भ में इन दोनों महान लेखकों का जीवन एवं साहित्यगत विशेषताओं का संक्षिप्त परिचय तुलनात्मक पध्दति पर जान लेना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

जन्म:

प्रेमचंद : (31 जुलाई 1880 – 8 अक्तूबर 1936)

हिंदी और उर्दू के महानतम भारतीय लेखकों में से प्रेमचंद एक है। इनका जन्म 31 जुलाई सन 1880 को बनारस के निकट लमही नामक गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ। पिता अजायबराय था। वे सरकारी मुलाजिम थे।

रावूरि भरद्वाज : (5 जुलाई 1927 – 18 अक्तूबर, 2013)

रावूरि भराद्वाज का जन्म क्रिष्णा जिला मोगुलूरु में 5 जुलै सन 1927 को एक मध्यवर्गीय और साधारण विस्वब्राहमण परिवार में हुआ। पिता कोटय्या थे, और माता का नाम मल्लिकांबा। इनका बचपन गुंटूर जिल्ला ताडिकोंडा में बीता।

तुलना

प्रेमचंद और भरद्वाज के जन्म काल में लग–भग 47 वर्ष का अंतर है। चाहे यह अंतर उम्र के हिसाब से दिखाई दे, फिर भी साहित्यिक व्यक्तित्वों के विकास में यह नगण्य माना जा सकता है। दोनों के परिवार आर्थिक दृष्टि से निम्न मध्यवर्गीय हो रहे है। निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में संघर्ष की जो स्थितियाँ होते है, प्रायः उनके परिवारों में रही है।

प्रेमचंद

बचपन और आरंभिक शिक्षा

- **बचपन :** प्रेमचंद का बचपन बहुत कठिन परिथितियों में व्यतीत हुआ। इनकी बचपन की कहानी संघर्ष की एक लम्बी कहानी है। इस कहनी में अभावों के दिन है, भूख और प्यास से तडपने के दिन है। माँ बाप को कच्ची उम्र में खो देने के दिन है, और फिर जिंद्गी भर उन दिनों को दुबारा पाने की लालक के दिन है।
- **शिक्षा :** प्रेमचंद की शिक्षा बडी कठिनाइयों के बीच हुई। अनेक बाधाओं का सहते हुए भी बी,ए पास किया।

रावूरि भरद्वाज

- **बचपन :** प्रेमचंद के समान भरद्वाज का बचपन भी बहुत कठिन परिस्थितियों में व्यतीत हुआ। इनके बचपन की कहानी संघर्ष की एक लम्बी कहानी है। इस कहानी में अभावों के दिन है। भूख और प्यास से तडपने के दिन है। अतः वे गरीबी के कारण अनेक दुखों का सामना किया है।
- **शिक्षा** : भरद्वाज् की आरंभिक शिक्षा घर पर हुई। सन 1932 से 1941 तक ताडिकोंडा हाइस्कूल में विघाभ्यास किया। आठ्वी कक्षा पढ्ते समय गरीबी के कारण स्कूल छोडना पडा। गरीबी के कारण भरद्वाज को विशेष पढाई नही हो पाई। एक ओर जीवन निर्वाह केलिए अनेक काम करते हुए अनेक ग्रंथों की रचना की।

तुलना

प्रेमचंद और भरद्वाज दोनों गरीबी में पले। शिक्षा प्रप्ति के प्रति दोनों का आकर्षण रहा है। बचपन में कठिनाइयों को अनुभव करने में दोनों मे साम्य होने पर भी शिक्षा प्राप्ति के विषय में अंतर है।

प्रेमचंद ने मेट्रिक परीक्षा के बाद आजीविका केलिए नौकरी करते हुए प्राइवेट रूप में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। भरद्वाज आठ्वी कक्षा पढ्ते समय स्कूल छोड दिया और साहित्य क्षेत्र में लगातार परिश्रम करने के कारण आँध्र विश्वविघालय ने 1980 में, जवहरलाल नेहरु टेक्नलाजिकल यूनिवर्सिटी ने 1987 में तथा 1991 में नागार्जुन विश्वविघलय ने ईनको सम्मानित डाक्टरेट की उपाधियों से सम्मानित किया है।

रचनाएँ

प्रेमचंद

प्रेमचंद आधुनिक युग के श्रेष्ठ एवं प्रतिभासंपन्न साहित्यकार है। उपान्यास (20) सम्राट के नाम से प्रसिध्द हुए है। 300 से ज्यादा कहानियाँ भी लिखे थे। ये सभी कहानियाँ हमें मानसरोवर के आठ भागों में मिलते है। इसके साथ अनेक नाटक, कविताएँ, लेख, बालसाहित्य पर भी अनेक रचनाएँ किया है। अनेक उर्दू, एवं अंग्रेजी ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया है। उनके सहित्य के आधार पर फिल्में भी बनाई गई।

रावूरि भरद्वाज

तेलुगु साहित्य के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं में रावूरि भरद्वाज प्रमुख है। वे आधुनिक काल के तेलुगु साहित्य के अच्छे कहानीकार, उपन्यासकार तथा रेडियो रचनाकार के रूप में प्रसिध्द हुए। उन्होंने 500 से ज्यादा कहानियाँ, 19 उपन्यास, 8 नाटक, 6 निबंध, जासूसी उपन्यास, सुगमविज्ञान शास्त्र , स्मृति साहित्य, बालसाहित्य पर भी अनेक ग्रंथ लिखा है । वे अच्छे अनुवादक भी है। विभिन्न भाषा ग्रंथों का तेलुगु में अनुवाद भी किया। उनके कहानी एवं उपन्यासों के आधार पर फिल्में बनायी गयी है। उनकी तेलुगु साहित्य सेवाओं केलिए 2012 में उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। अनेक बार उन्हें केंद्र,राष्ट्र सरकार और विभिन्न संस्थाओं के द्वारा अनेक प्रकार के उपाधियों से सम्मानित किया गया है।

तुलना

दोनों के साहित्य के आधार पर अनेक विश्वविघालयों में शोध कार्य संपन्न हुआ है। इनका सही पहचान उनकी रचनाओं में है। ये रचनाएँ ही उनके व्यक्तित्व का निर्माण करती है।

प्रस्तुत विषय में गरीबी के विभिन्न पक्षों से संबंधित प्रेमचंद और भरद्वाज की धारणओं का आकलन करना अभिप्रेत रहा है। इस विवेचन में भूख, कपडा, मकान आदि सामान्य आवश्यकताओं के साथ दृ साथ सामाजिक जीवन से सम्बंधित, व्यवस्थाओं के प्रभाव से जनित और परिस्थितियों से उत्पन्न गरीबी के स्वरूपों की भी संधारणत्मक स्थिति का परिचय तुलनात्मक रूप में दिया गया है।

गरीबी और भूख

गरीबी का विकट रूप समाज में मनुष्यवत जीने केलिए खाना ना मिलने की स्थितियों में मिलता है। अर्थतत्ववेत्ताओं और समाज–शास्त्रियों ने खाने की समस्या को प्राथमिकता दी है। समाज की सभी विक्रृतियों के पीछे मानव की भूख न मिटने की स्थिति प्रबल रूप से है। समाज में मानवीयता के पक्ष को सबल बनाने की दिशा में बढ्नेवाले प्रेमचंद और भरद्वाज दोनों ने अपनी कहानियों में "भूख" को एक समस्या के रूप में स्वीकार किया है। समाज की विक्रृतियों के बीच उसकी विड्म्बनाओं का चित्रण किया है। इन स्थितियों में दोनों महान लेखकों के विचार में भूख और उससे संबंधित संधारणओं का स्पष्ट चित्र उभर आया है। दोनों की कहानियों में प्राप्त भूख की संधारणाओं की एक झांकी यहाँ प्रस्तुत है।

प्रेमचंद

"खून सफेद" कहानी में प्रेमचंद ने यह स्पष्ट घोषित किया है कि– भूख की स्थिति का विकट रूप दो दिन तक खाना न मिलने की स्थिति में व्यक्त होता है। साधारण अवधी से अधिक अंतराल में खाना न पाना गरीबी की एक दर्दनाक स्थिति है। इसे प्रेमचंद ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है– "आज दो दिन से उसने खाने की सूरत नहीं देखीं । घर में जो कुछ विभूति थीं– गहने, कपडे, बरतन, भाँडे सब पेट में समा गये"।[4] प्रेमचंद यह मानते है कि दृ दिन में एक वक्त का खाना न मिलना, खाना न खा सकनेवाले बच्चों को दूध न मिलना दृ ये दोनों स्थितियाँ गरीबी की स्थिति को सूचित करते है। "बासी भात में खुदा का साझा" कहानी में प्रेमचंद ने इन शब्दों में यह बात व्यक्त की है–––"साल भर का बच्चा दूध केलिए विलख रहा था। एक वक्त का भोजन मिलता, तो दूसरे जून की चिंता होती। तकाजों के मारे बेचारे दीनानाथ को घर से निकलना मुष्किल था"।[5]

भरद्वाज

भरद्वाज यह मानते है कि दिन में एक वक्त का खाना मिलना, तन ढकने केलिए आधा कपडा मिलना, अपने बच्चों को भी सही तरह कपडे नहीं दे सकना, ये सभी गरीबी की पराकाष्टा को सूचित करते है। "वर्गदृष्टि" कहानी में ऐसी स्थिति को निम्न शब्दों के द्वारा व्यक्त किया है –– "यहाँ रहना मुष्किल होता है। खेत में फसल के समय कोई न कोई काम मिलता है, लेकिन साल भर भूखा रहना पड्ता है। आधा खाना आधा कपडा, यह आधा जीवन क्या जीवन है बाबाजी ।दो छोटे बच्चे है, शरीर पर ठीक कपडे नही है। आप के इलाके में कोई काम दिलवा दीजिए। मजदूरी करके आप के सामने पडा रहता हूँ "।[6]

जीवन की प्रमुख आवश्यकता पेट भर भोजन पाने की है। यह अनेक प्रकार से प्रयत्न करने पर भी पूरा नही होना गरीबी के भयंकर रूप का साक्षी होता है। "मूढ्निद्रा" कहानी में भरद्वाज ने इस स्थिति को इन शब्दों मे समझाया है– "शिवरामय्या को तीन लडकियाँ और दो लड्के है। उनकी आमदनी से खर्चा ज्यादा है। आमद्नी को बढाने केलिए उन्हों ने अनेक प्रयत्न किये है अध्यापक की नौकरी को छोड्कर एक दफ्तर में मुनीम बने। युध्द के समय में चावल व्यापारी के पास काम किया। चाय कम्पेनी के एजेंट बने। दिन रात मेहनत की। कितनी मेहनत करने पर भी उनकी आमदनी में परिवर्तन नही आया। एक ओर उनकी साथी व्यापार करके अधिक धन अर्जन कर रहे है तो वे इस प्रका ̧के अनेक काम कर रहे है। रोटी और कपडे के अभाव को पूरा करने केलिए अनेक प्रकार से प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल रही है"।[7]

उक्त झाँकियों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद और भरद्वाज दोनों ने जिनके जीवन भी गरीबी की विकट परिस्थितियों में गुजरे है, खाना न मिलने की स्थिति को गरीबी के केंद्र में रखकर देखा है। इस केलिए समाज का, समाज में व्याप्त दुर्नितियों को दूर करने योग्य व्यवस्थाओं को और मानव के अमानवीय व्यवहारों को जिम्मेदार ठहराया है। इस दृष्टि से प्रेमचंद और भरद्वाज के विचार समान है।

गरीबी और कपडा

मानव की भौतिक आवश्यकताओं में "खाना" के बाद कपडे का स्थान है। कपडा भी गरीबी कोपहचानने केलिए एक मानक के रूप में पाया जाता है। पूरे तन को ढ्कने केलिए कपडे का न होना गरीबी का एक लक्षण् है। फटे पुराने कपडों में पात्रों की परिकल्पना गरीबी की एक विभीषिका को दर्शाता है। इस संबंध में दूसरी

स्थिति वह है– जहाँ आवश्यक धोति कंबल खरीदने की स्थिति में व्यक्ति नही रहता। इतना ही नहीं आवश्यक कपडे खरीदने केलिए पैसा इकट्ठा करने पर भी व्यक्ति पर ऐसी लाचारिया आ गिरती है दृ जिससे उसे बिना धोती कम्बल खरीदे रह जाना पड्ता है। परिस्थितियों से समझौता करना पडता है। इस प्रकार की अनेक स्थितियों का वर्णन प्रेमचंद और भरद्वाज ने अपनी कहानियों में किया है तथा ऐसे संदर्भो में अपनी पात्रों पर गुजरी स्थितियों का भी अंकन किया है। इन्ही के बीच कपडे संबंधी उक्त साहित्यकारों के विचार व्यक्त है । कुछ उदाहरण आगे प्रस्तुत है ––

प्रेमचंद

खेती की रखवाली करनेवाले व्यक्ति केलिए रात के समय में कंबल की जरूरत होती है। उसको नही पाना गरीबी क एक लक्षण है। इसका परिचय प्रेमचंद ने "पूस की रात" कहानी में इस प्रकार दिया है –– "तीन ही तो रुपाये है, दे दोगे तो कम्बल कहाँ से आवेगा? माघ–पूस् की रात हार में कैसे कटेगी"?[8] शरीर पर ठीक कपडे नही होना गरीबी का एक निशान है। प्रेमचंद ने "कफन" कहानी में गरीब व्यक्ति की जीवन दशा का चित्रण इस प्रकार किया है ––– ष्घर में मिट्टी के दो– चार बरतनोंके सिवा और कोई सम्पत्ति नही। फटे हुए चीथडों से अपनी नग्नाता को ढाँके हुए जिये जाते थे"।[9]

भरद्वाज

शरीर पर ठीक कपडे का न होना गरीबी को सूचित करता है। भरद्वाज ने "आहुति" नामक कहानी में पहनने केलिए सही कपडे न पाकर गरीबी में पलनेवाली औरत का परिचय इस प्रकार दिया है– "गंदी साडी, फटी हुई कुरती, धूलि से भर हुआ सिर ———————— इसमें गरीबी दिखाई पडती है"।[10] ऐसे ही वे "नाकुदेवुनिचूडा लनिउंदि" (मुझे भगवान को देख्नेने की इच्छा है) कहानी में खाना तथा कपडे के अभाव में दूसरों के पास काम करके जीवन बितानेवाले एक छोटे बालक का परिचय इस प्रकार दिया है– दृ –"ब्रह्माजी दस साल का बालक था । शरीर पर कुरता नही। सिर परतेल भी नहीं। जो कपडे वह पह्ना हुआ था, वह भी ठीक नही"।[11] गरीबों के प्रति दोनों कलाकार यही चाहते है कि उनकेलिए अच्छे कपडे मिलें।

गरीबी और मकान

मानव ने अपनी सुरक्षा की भावना से प्रेरित होकर मकान की कल्पना की है। प्रथमतः वह प्रकृति की विभीषिकाओं से तथा सामान्य धूप, वर्षा आदि से अपने को बचाने के उद्देश्य से मकान चाहता था। इस स्थिति में चाहे झोंपडी ही सही उपयुक्त रूप से आवश्यकता की पूर्ति करनेवाली हो तो वह संतोष प्राप्त करता है। इस केसाथ पानी आदि की सामान्य आवश्यकताओं का रहना भी एक आवश्यक अंश है। इनके अभाव में मनव को गरीब माना जाता है। सडकों के किनारों, पेड की छायाओं, झोंपडों तथा भगनावषशेषों में सिर बचानेवाले अभागों का चित्रण प्रेमचंद और भरद्वाज ने अपनी कहानियों में किया है। इन्ही के बीच उक्त साहित्यकारों की मकान संबंधी धारणा गरीबी के साथ जुड्कर व्यक्त होती है। इसकी कुछ झांकियाँ यहाँ प्रस्तुत है।

प्रेमचंद

प्रेमचंद के अनुसार जीर्ण और ध्वंसावशेष रूप से बची झौंपडी ही गरीबों केलिए मिलती है। उसमें सुविधाएँ तो दूर, धूप और वर्षा से बचने की सुविधा भी नही रहती है। ऐसे ही वे संपत्ति खोकर भगनावशेष झोंपडी में पडे रहते हुए दुःख झेलनेवाली गरीब औरात का परिचय "समरयात्रा" कहानी में इस प्राकार दी है –– "वह अपनी बूढी सिकुडी हुई आँखों से यह समारोह देख रही है और पछता रही है"।[12] भाइयों के आपसी कलहों के कारण गरीब बनकर घ्र के भग्नावशेषों में जीवन बितानेवालों का परिचय प्रेमचंद ने "गुप्तधन" कहानी में इन शब्दों में किया है –– "घर क्या था। पुरानी समृध्दि का ध्वंसावशेष मात्र था"।[13]

भरद्वाज

जिस समाज में गरीबी आजादी का रूप धारण करके सभी तरह से मानव की इच्छाओं की आपूर्ति में सहारा देती रहती है, ऐसी आजादी से पूर्ण रूप में विकसित सामाजिक स्वरूप का उल्लेख भरद्वाज ने "ओकचिलुक कथा" (एक तोते की कहानी) में किया है––– "वहाँ की आजादी मेरी कल्पना और सोच से परे की है ।वहाँ के लोगों केलिए झोंपडियों में रहने की आजादी है तथा पेडों केतले, सडकों के किनारे पडे रहने का आजादी है"।[14] एसे ही "डाक्टर्सडैलमा" (डाक्टरों की दुविधा) कहानी में मानव की घ र्संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने केलिए वे गरीबों के पक्ष से समाज से यही चाह्ते है कि–– "उनके लिए ज्यदा इच्छायें नहीं है। बडे–बडे स्वप्नों की कल्पना भी वे नहीं कर रहे हैं। शक्ति भर काम करने केलिए वे तैयार है। उन्हें सिर्फ इतना चाहिए कि पेट भर खाना और रहने की छाया"।[15] उक्त संधारणात्मक शब्द चित्रों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गरीबी के संबंध में दोनों कलाकार मात्र इतना ही चाहते है कि उनके सिर पर एक अच्छी छाया हो। यह भी घोषित करते है कि वे इससे अधिक नही चाहते।

बीमारी

मानव का प्रक्रुतितः बीमार होना स्वाभाविक है। समाज ने मानव को पीडा पहूँचनेवाली बीमारियों केलिए अनेक प्रकार की दवाओं का आविष्कार किया है। किंतु उनको पाने की व्यवस्था में आर्थिक स्थिति बाधा पहूँचाती है। समाज में अनेक ऐसे व्यक्ति भी रहते है जो अपने या अपनों केलिए आवश्यक दवाओं को भी प्राप्त नही कर सकते। इस प्रकार के लोगों को गरीब कहा जाता है। यह एक विडंबना ही है कि कुछ संदर्भो में मनुष्य जान बचाने केलिए आवश्यक दवाओं को भी खरीद नही सक्ता है। इस स्थिति को पेमचंद और भरद्वाज दोनों ने मानव केलिए असहनीय दशा के रूप में स्वीकार किया है। समाज की ऐसी स्थितियों का चित्रण करके दोनों ने इसका निदान समाज से चाहा है।

प्रेमचंद

प्रेमचंद के अनुसार रोगी को दवा खरीदने की स्थिति में न रहना भी गरीबी का एक लक्षण है। "मंत्र" कहानी में उन्होंने इस प्रकार की स्थिति को निम्न शब्दों में व्यक्त किया है– "बूढे ने पगडी उतारकर चौखट पर रख दी और रोकर बोला –– हुजूर एक निगाह देख लें। बस एक निगाह! लडका हाथ से चला जायेगा हुजूर, सात लडकों में यही एक बच रहा है, हुजूर। हम दोनों आद्मी रो–रोकर मर जायेंगे, सरकार ! आप की बढ्ती होय, दीनबंधु"।[16]

बीमार को दवा न दिला सकने की स्थिति में रहना असहनीय गरीबी है। ऐसे संदर्भ में "अमावास्या की रात्रि" कहानी में प्रेमचंद के ये वाक्य उल्लेखनीय है– "वैघ जी बहुत खुश हुए । रात के समय उनकी फीस दुगुनी थीं। लालटेन लिए बाहर निकले तो देवदत्त रोता हुआ उनके पैरों से लिपट गया और बोला– वैघ जी, इस समय मुझ पर दया कीजिए। गिरिजा अब कोई सायत की पाहुनी है अब आप ही उसे बचा सक्ते है। यों तो मेरे भाग्य में जो लिखा है, वही होगाय किंतु इस समय तनिक चलकर आप देख ले, तो मेरे लिए दिल का दाह मिट जायेगा। मुझे धैर्य हो जायेगा कि उसके लिए मुझ से जो कुछ हो सक्ता था, मैने किया। परमात्मा जानता है कि मै इस केलिए योग्य नही हूँ कि आप को कुछ सेवा करू; किंतु

जब तक जीउँगा, आप का यश गाऊँगा और आप के इशारों का गुलाम बना रहूँगा"।[17]

भरद्वाज

गरीबी के कारण रोगी को दवा न दिला सकने की स्थिति में रहनेवाले व्यक्ति की असहाय स्थिति का वर्णन भरद्वाज ने भी "उरितीयबड्डा निजम" (फाँसी पर चढाया गया सत्य) कहानी में निम्न शब्दों के द्वरा व्यक्त किया है ––– "सदाशिवं रोगी माँ को इलाज करवाने के लिए पैसा भेजना चाहा। लेकिन उसके पास पैसा नहीं है। दूसरों के पास किसी चीज को गिरवी रखकर पैसा लाने के लिए घर में योग्य् वस्तु नही है। पिछ्ले महीने में पद्मा का वेणी कुप्पिलों को तथा छोटे बालक का चाँदी का पात्र बेच दिया। बहुत दिनों के पहले अमींचंद के पास रखी हुई घडी को अभी तक नही लाया। उस पर आशा छोडकर बहुत दिन हो गये"।[18] भरद्वाज ने "डब्बु जब्बु" (पैसे की बीमारी) कहानी में रोगी व्यक्ति केलिए दवा न मिलने की स्थिति का वर्णन इस प्रकार दिया है– "नारायण की माँ रोग से पीडित थी। उसकी इलाज करने केलिए पैसा चहिए। पैसे के बिना डाक्टर नही आता। उसके पास पैसा नही है। गरीब केलिए रोटी, कपडा और मकान आदि नही मिलते तो संसार में उनका अस्तित्व ही नही होता। लेकिन गरीब के पास एक है दृ धनाभाव का रोग। वह कभी भी उनको नही छोड़ता य वस्तु केलिए छाया के रूप में, हवा के हिलन के रूप में, गरीब व्यक्ति के पास सदा पैसे का रोग रहता है"।[19] उक्त कथनों से यह स्पष्ट होता है कि दोनों लेखकों के विचारों में इस संदर्भ को लेकर मत ऐक्य है। वे दोनों इस प्रकार की स्थिति से मुक्त समाज को चाहते है।

गरीबी और अकाल

प्रकृति प्रकोप से जनित अकाल की स्थिति में गरीबों की दशा असहनीय होती है। प्रक्रुति पर पलनेवालों का जीवन दुर्भर हो जाता है। प्रेमचंद और भरद्वाज दोनों ने अकाल से पीडित गरीबों की दशा का वर्णन किया है।

प्रेमचंद

अकाल की स्थिति में व्यक्ति से अधिक व्यक्तियों के समूह पर प्रभाव पड्ता है। गरीबी की विकट स्थिति के संबंध में प्रेमचंद व्यधित हुए है। "अनिष्ट शंका अकाल की स्थिति में व्यक्ति से अधिक व्यक्तियों के समूह पर प्रभाव पड्ता है। गरीबी की कहानी में निम्न शब्दों में अकाल की विभीषिका का वर्णन किया है, जो गरीबी की पीडा का परिचायक होता है। "बुंदेल्खंड में भीषण दुर्भिक्ष था। लोग व्रक्षो की छालें छील–छीलकर खाते थे। क्षुधा पीडा ने भक्ष्या भक्ष्य की पहचान मिटा दी थीं। पशुओं का तो कह्ना ही क्या, मानव संताने कौडियों के मोल बिकती थीं। पादरियों की चढ बनी थी, उनके अनाथाल्यों में नित्य गोल के गोल बच्चे भेडों की भाँति हाँके जाते थे। माँ की ममता मुट्टी भर अनाज पर कुर्बान हो जाती।[20]

भरद्वज

भरद्वाज ने भी अकाल को गरीबों के समूह पर ट्टनेवाले अस्त्र के रूप में स्वीकारा है। प्रेमचंद से आगे बढ्कर गाँव के गाँव उजड्ने की बात भी भरद्वाज ने की है। गाँव में रहनेवाले गरीबों की ऐसी स्थिति का एक परिचय भरद्वाज को मिल चुका है। इसलिए "नर(क)लोकम" में यह चित्र और विस्तृत बना है ––––"देश अकाल में था । खाने पीने के अभाव में लोग पीडित हो रहे है। सारे गाँव उजड गये। लाखों ग्रमीण शहार जा रहे है। बूढे और नन्हें बच्चे तडप – तडप कर प्राण त्याग कर रहे है जिनके पास जायदाद थी, उन्होंने अपने घर,खेत सब कुछ बेचकर खा रहे है। पेडों के पत्तों, शाखाओं तथा छालों को खाकर कुछ समय बिताऐ। कही भी हरा पेड नही दिखाई दे रहा है। पति–पत्नी, माता–बच्चे, भाई–बहन सभी बिछुड गये। क्षुधा की पीडा से बचने केलिए खाने योगय न होनेवाली चीजों को खाने के कारण बीमार पड गये। अकाल के विकराल रूप के सामने लखों लाश हो रहे है। उनको आश्रय देनेवाला तथा उनके बारे में सोचनेवाला कोई भी नही रहें"।[21] उक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट होता है कि समाज में रहनेवाले वे सभी गरीब है जिन्हें अकाल के समयों में जीवन निर्वाह के लिए भक्ष्याभक्ष्य का भेद किये बिना जो मिल जाता है, उसे खाना है अथवा भूख से अंतिम साँसे छोड्ते है। यह धारणा भी प्रेमचंद और भरद्वाज दोनों में समान रूप से मिलती है।

गरीबीरू आमदनी और खर्च

सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य को कुछ सामाजिक गतिविधियों से जुड्कर चलना होता है। त्योहार, व्रत, बच्चों का पालन–पोषण, शिक्षा, दीक्षा आदि से जूझने केलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी के रूप में अर्थ से संघर्ष करना पड्ता है। यघपि धनार्जन के विविध मार्ग है। फिर भी निर्बल की सीमाएँ उपयुक्त अर्थ का आर्जन करने नही देती। पर सामाजिक और परम्परागत मान्यताएँ उसे खर्च करने केलिए बाध्य करती है। ऐसी स्थिति में मनुष्य को आमदनी से ऊपर जो खर्च है, गरीबी की असह्नीय दशा तक पहूँचाती है। एसी स्थितियों का प्रेमचंद और भरद्वाज दोनों ने अपनी कहानियों में आविष्कार किया है और उनसे संबंधित अपने विचारों को प्रभावशाली शब्दों में व्यक्त भी किया है।

प्रेमचंद

प्रेमचंद ने आमादनी से खर्चा ज्यादा होने पर मनुष्य के मन में उभरनेवाली भावनाओं का एक चित्र "बोध" नामाक कहानी में खींचा है। यह चित्र मानसिक संघर्ष का एक सुंदर परिचायक है। वह इसप्रकार है दृ "पंडित चंद्रधर ने एक अप्पर प्राइमरी में मुदरसी तो कर ली थी, किंतु सदा पछ्ताया करते थे कि– कहाँ से इस जंजाल में आ फँसे। यदि किस्सी अन्य विभाग में नौकर होता तो अब तक हाथ में चार पैसे होते, आराम से जीवन व्यतीत होता। यहाँ तो महीने भर प्रतीक्षा करने के पीछे कही पन्द्रह रुपये देखने को मिलते है। वह भी इधर आये, उधर गायब ! न खाने का सुख, न पहनने का आराम। हम से तो मजूर ही भले"।[22]

भरद्वाज

भरद्वाज यह स्वीकार करते है कि आमदनी से आधिक खर्चा मनुष्य को गरीब बना देता है। सामान्य मानव जिस के पास और कोई रास्ता नही है, उसकी पारिवारिक स्थिति विकट बन जाती है। ऐसे संदर्भ को लेकर भरद्वाज ने "चेदुफलम" (कडुवा फल) नामक कहानी लिखी है। इसमें उक्त स्थिति पर उनकी आलोचना इसप्रकार है दृ "भूषय्या को पाँच संताने है। अध्यापक की नौकरी से मिलनेवाली आमदनी पेट भरने केलिए भी काफी नही होती"।[23]

इन स्थितियों के दर्शन से यह विदित होता है कि आमदनी और खर्चा के बीच दो स्थितियाँ मिलती है –– एक आमद्नी का अभाव और खर्चा का चलता रहना और दूसरा आमदनी कम और खर्चा का ज्यादा होना। इन दोनों स्थितियों में प्रेमचंद और भरद्वाज की कल्पनाएँ सम है। उनकी सहानुभूति गरीबों से है और आक्रोश ऐसे समाज पर है जो उक्त स्थितियों को उभरने देता है।

शोषण के परिणाम के रूप में गरिबी

समाज के विभिन्न वर्गों द्वरा शोषण

शोषण एक सर्व व्यापी बीमारी है। शोषण मुख्य रूप से तीन प्रकार का माना जाता है। एक– श्रम लेकर उसका मूल्य बिल्कुल न चुकाना, दूसरा– श्रम का मूल्य उपयुक्त रूप से न देना और तीसरा

श्रम का हरण ऐसे करना जिससे पता ही न चले कि श्रम का हरण किया जा रहा है। इस प्रकार की स्थिति सर्वत्र प्रप्त होता है। इसकी समष्टि का एक ओर परिणाम भी उभरता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य बिल्कुल काम चोर हो जाता है और समाज की विडम्बनाओं के बीच उसी का बोझ बनकर रहता है। प्रायः इन सभी पक्षों का प्रेमचंद तथा भरद्वाज की कहानियों में उद्घाटन हुआ है। उनके विभिन्न रूपों पर एक विहंगम वीक्षण निम्न उदाहरणों से हो जाता है।

प्रेमचंद

सामाजिक शोषण के कारण गरीब बनकर अपने जीवन पर्यंत दूसरों के शोषण से बचने की कोशिश करते हुए विफल होकर खाना,कपडा जैसी साधारण आवश्यकताओं को पूरा न करके, अपनी श्रमशक्ति के मूल्य को न पा सकने पर होनेवाली व्यक्ति की दयनीय स्थिति का वर्णन प्रेमचंद ने "सवासेर गेहूँ" नामक कहानी में इसप्रकार किया है –– "शंकर ने साल भर तक कठिन तपस्या कीय मीयाद के पहले रुपये अदा करने का उसने व्रत सा कर लिया। दोपहर के पहले भी चूल्हा न जलता था, चेबेने पर बसर होती थी, अब वह भी बंद हुआ, केवल लड्के किलिए रात को रोटियाँ रख दी जाती। पैसे रोज का तम्बाकू पी जाता था, यही एक व्यसन था, जिसका वह कभी त्याग न कर सका था। अब वह व्यसन भी इस कठिन व्रत की भेंट हो गया। उसने चिलम पटक दी, हुक्का तोड दिया और तम्बाकू की हाँडी चूर–चूर कर डाली। कपडे पहले ही त्याग की चरम सीमा तक पहूँच चुके थे, अब वह भी प्रक्रुति की न्यूनतम रेखाओं में आबध्द हो गए। शिशिर की अस्ति–बेधक शीत को उसने आग तापकर काट दिया" ।[24]

भरद्वाज

गरीबी के कारण व्यक्ति अपने आत्माभिमान तक दबाकर दूसरों के शोषण से विवश होकर जीने की स्थिति का वर्णन भरद्वाज ने "मल्ली तेल्लवारिंदि" (फिर सुबह हुई) कहानी में निम्न शब्दों में किया है– "तुरंगराव ने अनेकों साल तक तहसील की आफीस में काम किया। अपना सारा जीवन कागजों तथा अंकों केलिए खर्च किया। अपनी इच्छाओं को मारकर अभिरुचियों को जन्म की कैद दिला दी। अपनी ऊपरी अधिकारियों की इच्छाएँ और अभिरुचियाँ ही तुरंगराव की है" ।[25]

प्रेमचंद और भरद्वाज द्वारा व्यक्त शोषण की स्थितियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दोनों का आक्रोश ऐसी व्यवस्थाओं तथा उन व्यवस्था के प्रतीकों पर है। प्रेमचंद इस संदर्भ में उतनी मुखर नही होते जितने कि भरद्वाज। भरद्वाज का आक्रोश फूटकर अन्योक्तियों से बाहर सीधे क्रोध भरे शब्दों के रूप में व्यक्त होता है। इस अंतर को छोड्कर इन संदर्भो में प्रेमचंद और भरद्वाज एक दूसरे के नजदीक लगते है।

समाज के द्वारा बहिष्कार–दृगरीबी

गरीबी एक ओर सामाजिक स्थिति एवं समाज व्यवस्थाओं के द्वारा स्वीक्रृत समूह से बहिष्कार की पध्दति में दिखाई देती है। परम्परागत किसी मान्यता को, सामाजिक किसी नियम को अथवा अन्य प्रगतिपूर्ण कदम उठाने पर समाज का व्यवस्थित वर्ग व्यक्ति विशेष को अपने से दूर कर देता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य अपनी आजीविका केलिए आवश्यक चीजों को नही पा सकेगा। इतना ही नही अपने लिए श्रम करने के लिए तैयार रहने पर भी काम न देने की स्थिति के कारण वह गरीबी का शिकार होता है। इस प्रकार की स्थिति को प्रेमचंद ने ही महसूस किया है। हो सकता है अवधि के अंतराल के कारण भरद्वाज ने इसे व्यक्त नही किया है।

प्रेमचंद

सामाजिक पाबंदियों को तोडने के कारण जब कोई व्यक्ति सामाजिक धारा से बहिष्क्रुत किया जाता है तो उसका जीवन दुर्भर होता है एसी स्थिति में मनुष्य गरीब इसलिए होता है कि समाज उसे अपना जीवन बिताने नही दे रहा है। फलतः ऐसे व्यक्ति संघर्षमय जीवन से जूझते रहते है। इस संघर्ष के बीच जितना उनके पास है सब को बेचकर जीते है। अंततोगत्वा वे गरीब हो जाते है। इस प्रकार के गरीबी के कारणों को प्रेमचंद ने "बहिष्कार" कहानी में निम्न शब्दों के द्वारा व्यक्त किया है– "संपन्नता अपमान और बहिष्कार को तुच्छ समझती है। उनके अभाव में ये बाधाएँ प्राणांतक हो जाती है" ।[26]

अनाथ – गरीबी

जीवन की विभीषिकाओं के कारण बचपन से ही कुछ अनाथ हो जाते है। बेसहारे ऐसे लोगों की स्थिति गरीबी की भीषणताओं के बीच में गुजरती है। इसके संबंध में प्रेमचंद ने अपने विचार तो व्यक्त किये है किन्तु भरद्वाज ने इस स्थिति की ओर संकेत मात्र किया है। ऐसे अभागे समाज के लिए या तो भार बनते है अथवा सामाजिक स्थिति के विध्वंसक।

प्रेमचंद

अनाथ होकर अनेक प्रकार के काम करके भी अपनी जीवन की साधाराण आवश्यकताओं को पूरा न करने की स्थिति में रहना गरीबी का एक लक्षण है। ऐसी ही स्थिति के आधर पर प्रेमचंद ने "विश्वास" नामक कहानी लिखी है। इसके संबंध में उनके पात्र के मुँह से निकले शब्द इस प्रकार है– "मै जन्म से अभागा हूँ। माता–पिता का मुँह ही देखना नसीब न हुआ 1 जिस दयाशील महिला ने मुझे आश्रय दिया था, वह भी मुझे 13 वर्ष् की अवस्था में अनाथ छोड्कर परलोक सिधर गयी। उस समय मेरे सिर पर जो कुछ बीती उसे याद करके इतनी लज्जा आती है कि किसी को मुँह न दिखाऊ। मै ने धोबी का काम कियाय मोची का काम किया, घोडे की साईसी कीय एक होटल में बरतन माँझता रहा, यहाँ तक कि कितनी ही बार क्षुधा से व्याकुल होकर भीख भी माँगे । मजदूरी करने को बुरा नही समझता, आज भी मजदूरी ही करता हूँ। भीख माँगना भी किसी–किसी दशा में क्षम्य है, लेकिन मैं ने उस अवस्था में ऐसे ऐसे कर्म किये, जिन्हें कहते लज्जा आती है–– चोरी की, विश्वासघात किया, यहाँ तक चोरी के अपराध में कैद की सजा भी पायी" ।[27] इस प्रकार के वक्तव्य भरद्वाज में नही मिलते फिर भी उनकी "आत्माभिमानी" नामककहानी में इस प्रकार की स्थिति से गुजरता हुआ "सत्यम" पात्र तथा "विधिनिर्णयम" कहानी में "राममूर्ति" का पात्र मिलते है।

उक्त अध्ययन से और प्रस्तुत उध्दरणों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि प्रेमचंद और भरद्वाज दोनों ने प्रमुखतः गरीबी की भौतिक आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर ही गरीबी के संबंध में अपनी संधारणये बनायी है। उनकी संधारणाओं के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि खाना, कपडा, मकान तथा शारीरिक तंदुरुस्ती ये चारों मानव केलिए आवश्यक है। जिनके अभाव या कमी में ही गरीबी की तर तम स्थिति व्यकत होती है। अकाल एक प्रकार से गरीबी की स्थिति को भीषण बनानेवाला है तो अल्प आमदनी और अधिक खर्चा गरीब को और संत्रास देनेवाला है। श्रम का हरण एक ओर गरीबी को व्यक्त करनेवाला तत्व है तो दूसरी ओर परिस्थितियों की विडम्बनाओं से अनाथों के रूप में जीनेवाले बच्चों का विकास भी उन्हें गरीबी की ओर ले जानेवाला होता है। इन सब के अलावा समाज में किसी कारण से एक व्यक्ति का सामाजिक जीवन से बहिष्कार भी गरीबी का कारक बनता है।

इन संधारणओं में प्रेमचंद और भरद्वाज सम दीखते है। ऐसी स्थितियों के आधर पर ही गरीब और गरीबी के विकराल रूप का चित्रण उन्होंने किया है। इनमें कुछ भौतिक है तो कुछ मानसिक रूप से मनुष्य को पीडित करनेवाली भी निहित है। शारीरिक श्रम के फलस्वरूप उपयुक्त फल न मिलने पर क्रांति की भावना, आत्महनन की स्थिति, नैराश्य भावना आदि के उभरने की ओर भी दोनों ने संकेत किया है। इन संधारणओं के आधार पर कहानी की परिकल्पना तथा संरचना, प्रेमचंद और भरद्वाज की क्रांतिशीलता और असहाय के प्रति सहृर्दयता को दर्शाती है। अतः वे दोनों गरीबी रहित समाज की कल्पना करते है और सकल जगत का कल्याण चाहते है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Challenge of poverty && A- Mahalanabhish & page 11
2. Wealth of nations & Adam Smith – page 90
3. An Introduction to sociology – J-L Jillin and j-p jillin – page 721
4. खून सफेद दृमानसरोवर – भाग 8– प्रेमचंद – पृष्ठ – 5
5. बासी भात में खुदा का साझा – मानसरोवर–भाग 2– प्रेमचंद दृ पृष्ठ– 195
6. वर्ग दृष्टि – नाकुदेवुनिचूडालनिवुंदि – रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ. 215
7. मूढ निद्रा– भरद्वाजकथलु दृभाग 1 – रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 102
8. पूस की रात दृ मानसरोवर–भाग–1 – प्रेमचंद – पृष्ठ 157
9. कफन – प्रेमचंद – पृष्ठ 6
10. आहुति – सौंदरनंदम दृरावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 53
11. नाकु देवुनि चूडालनिवुंदि – रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 254
12. समरयात्रा– मानसरोवर भाग 7 – प्रेमचंद – पृष्ठ 66
13. गुप्त धन – मानसरोवर भाग 8 – प्रेमचंद – पृष्ठ 218
14. ओकचिलुक कथा – श्रीरस्तु – रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 70
15. डाक्टर्स डैलमा – सिरिकिंजेप्पडु– रावूरि भरद्वाज, पृष्ठ 181
16. मंत्र– 2– मानसरोवर भाग 5 – प्रेमचंद – पृष्ठ 286
17. अमावास्या की रात्री– मानसरोवर – भाग 6 – प्रेमचंद – पृष्ठ 123
18. उरितीयबड्डा निजम – विजयविलासम – रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 43
19. डब्बु जब्बु – भरद्वाज कथलु – भाग 2 – रावुरि भरद्वज – पृष्ठ 189
20. अनिष्टशंका – मानसरोवर – भाग – 4, प्रेमचंद – पृष्ठ 241
21. नर (क)लोकम – सिरिकिंजेप्पडु – रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 159 – 160
22. बोध – मानसरोवर – भाग – 8 – प्रेमचंद – पृष्ठ 72
23. चेदुफलम – भरद्वाज कथलु – भाग – 1 – रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 84
24. सवासेर गेहू – मानसरोवर – भाग 4 – प्रेमचंद – पृष्ठ 191–192
25. मल्लीतेल्लवारिंदि – भरद्वाज कथलु – भाग 1– रावूरि भरद्वाज – पृष्ठ 192
26. बहिष्कार – मानसरोवर – भाग – 5 – प्रेमचंद – पृष्ठ 104–105
27. विश्वास – मानसरोवर – भाग –3 – प्रेमचंद – पृष्ठ 13